दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-1

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-23 HL-2301

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Karmveer Narwadiy

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 22 June 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	5	2	6	7	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो 13-14वी सदी मे गुलाम वंश के पतन के बाद साहित्य में पैर जमाना शुरु करते है। खुसरो ने हिन्दी, खड़ी बोली, उर्दू, ब्रज भाषा आदि में रचना कार्य किया। उन्होंने पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने, गजल, खालिकबारी, ढकोसला इत्यादि को चुना।

खुसरो ने खड़ी बोली के साहित्य मे लिखा है।

~~मेरा मोरे सिंगार~~
एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा गिरा
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक ना गिरे

पान क्यों सड़ा?
घोड़ा क्यों अड़ा?
फेरा न था।

खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का स्वरूप आश्चर्यजनक स्थिति मे जता देता है, जो कार्य शुक्ल जी के अनुसार सूर ने ब्रज भाषा मे किया। वह कार्य खुसरो ने खड़ी बोली के सन्दर्भ मे किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खुसरों के साहित्य में भाषायी वैविध्य भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है. साथ ही विषय वैविध्य भी। खुसरों ने सूफीयाना भाव मे उठा है-

खुसरो रैन सुहाग की, जागी पीके संग
तन मेरो मन पीऊ को, दोऊ ~~भय~~ एक रंग।

<u>अतः</u> उन्होनें समाज के प्रति गहरी संवेदनाऐं प्रकट की है। वे धार्मिक आडम्बर, महिला समस्या आदि पर लिखते है.

उज्जल बरन, अधीन तन, एक चित्त दो ध्यान
देखत में तो साधु है. निपट पाप की खान।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में <u>लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का</u> योगदान

"लोकमान्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" नारा बुलंद करने वाले तिलक एक उग्रवादी नेता थे जो अंग्रेजों के द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियो में भाग लेने के विरोधी थे। इसी क्रम में उन्होनें हिन्दी भाषा के लिए प्रयास किया।

तिलक का मानना था आप किसी राष्ट्र के लोगों को साथ-साथ लाना चाहते हो तो समान भाषा से बढ़कर कोई शक्ति नही है। इसीलिए उन्होंने देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि तथा हिन्दी को 'राष्ट्र भाषा' के विचार को समर्थित किया।

साथ ही उन्होने जनसामान्य तक विचार-प्रसार के लिए केसरी, मराठी आदि पत्रों का प्रकाशन किया जिनमे केसरी हिन्दी में सेकलित था।

वस्तुतः तिलक उग्रवादी विचारधारा के नेता थे जो आंदोलन मे सम्पूर्ण जन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बल का प्रयोग करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार करने के लिए बार-बार आग्रह किया।

हिन्दी आज भी सत्ता के दरवाजों के नीचे राष्ट्रभाषा बनने के लिए तैयार बैठी है, जरूरत है तो सभी राजनीतिक दलो को मिलकर तिलक के सपने को साकार करने की कवायद की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मे राष्ट्रभाषा के तौर पर कार्य कर रही थी। यह न केवल उत्तर भारत बल्कि पूरे सम्पूर्ण भारत मे प्रचार समीतियो, पार्टियो द्वारा प्रसारित हो रही थी जिनमें अनेक नेता महात्मा गाँधी, तिलक, मालवीय, लाला लाजपत राय आदि उल्लेखनीय है।

मालवीय जी के दिखाए गए पथपर चलकर पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने हिन्दी की अद्वितीय सेवा की। सर्वप्रथम संघ की राजभाषा बनाने का प्रयास उन्होंने ही किया था। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलनो के संस्थापक थे। जो आगामी भविष्यगत पीढियों के लिए साहित्य की धरोहर होगा।

लाला जी की मृत्यु के बाद टण्डन लोक सेवा मण्डल के सभापति बन गए। जिसका मुख्यालय लाहौर था। उन्होंने कहा -

" राष्ट्रभाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे केवल एक जगह के लोग ही न समझे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

बल्कि देश के सभी प्रान्तों के लोग सुगमता से जान सके।

साथ ही वे कहते थे । मै हिन्दी भाषा का प्रचार, राष्ट्रभाषा के प्रचार को. राष्ट्रीयता का ~~मुख्य~~ अंग ~~को~~ ~~समझी~~ मानता हूँ।

<u>अतः</u> पुरुषोत्तम दास टण्डन जी का हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना, राष्ट्रभाषा की ओर सुझाव. राजभाषा के लिए प्रयास युगो-युगो तक हिन्दी साहित्य में बना रहेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

रहीम अकबर के दरबारी कवियों मे से प्रमुख थे, उन्होने उर्दू, खडी बोली, ब्रज भाषा मे साहित्य की रचना की। जिनमे वे ज्यादातर मुक्तक शैली मे लिखते है।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

रहीम खडी बोली का ऐसा सार्थक प्रयोग 14-15 वी सदी मे कर रहे थे जैसा आज होता है। इसी तरह का प्रयास खुसरो ने भी किया था। ~~[illegible]~~ रहीम सामाजिक प्रेम को समझाते हुए विषय वैविध्य की अनेक रचनाएँ करते है। एक अन्य रचना निम्न है।

बिगरी बात बनै नही, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।

इसमें खडी बोली मे ब्रज, अपभ्रंश इत्यादि का प्रभाव दिखता है लेकिन खड़ी बोली के पाठक के लिए भी यह समझने योग्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अतः रहीम ने तत्कालीन सामाजिक समस्यों, प्रेम, सौंदर्यता, सहिष्णुता आदि को काव्य का विषय बनाकर लोगों में प्रसार किया। उस समय भी संस्कृत से व्युत्पन्न भाषाएँ जनसम्पर्क का कार्य कर रह रही थी। अतः खड़ी बोली का यह स्वरूप अत्यंत शोभनीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'मारवाड़ी' बोली

मारवाड़ी बोली राजस्थान में बोली जाने वाली विभिन्न बोलियों में से है। जिसे मुख्यतः पश्चिमी राजस्थान (जोधपुर, मारवाड़, जैसलमेर) क्षेत्रों में बोली जाती है। हाल ही में मारवाड़ी बोली को मान्यता दिलाने के लिए लोगों द्वारा काफी प्रयास किया जा रहा है।

विशेषताएँ

(i) ओकारान्त → ध्वनि अधिक ओकारान्त।
रासो > रासक , बोल्यो

(ii) स्वर तथा व्यंजन शब्दावली खड़ी बोली हिन्दी से ही लिए गए हैं।

(iii) नए शब्दों का निर्माण हुआ है।
छोरो, मोड्यार इत्यादि।

(iv) वचन व्यवस्था, लिंग व्यवस्था खड़ी बोली हिंदी के समान ही है।

मारवाड़ी बोली में राजपूती साहित्य की रचना की गई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मारवाड़ी बोली प्रचलित राजस्थान की एक प्रतिष्ठित बोली है जिसकी विकास पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

महात्मा गाँधी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पथ प्रदर्शक थे। अतः वे राष्ट्रभाषा की आवश्यकता को भली-भाँति जानते थे जिसके लिए उन्होंने हिन्दी को सांस्कृतिक व राजनीतिक जुड़ाव की भाषा के रूप मे देखा और राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार किया।

गाँधी जी ने 1918 में ही इन्दौर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन मे कहा.

"आप हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का गौरव प्रदान करे। हिन्दी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्यपालन करना चाहिए।"

साथ ही वे मानते थे हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।

गाँधीजी ने सैद्धान्तिक रूप से हिन्दी को राष्ट्रभाषा की व्याख्या करते हुए राष्ट्रभाषा की निम्नलिखित आवश्यकताएँ समझायी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

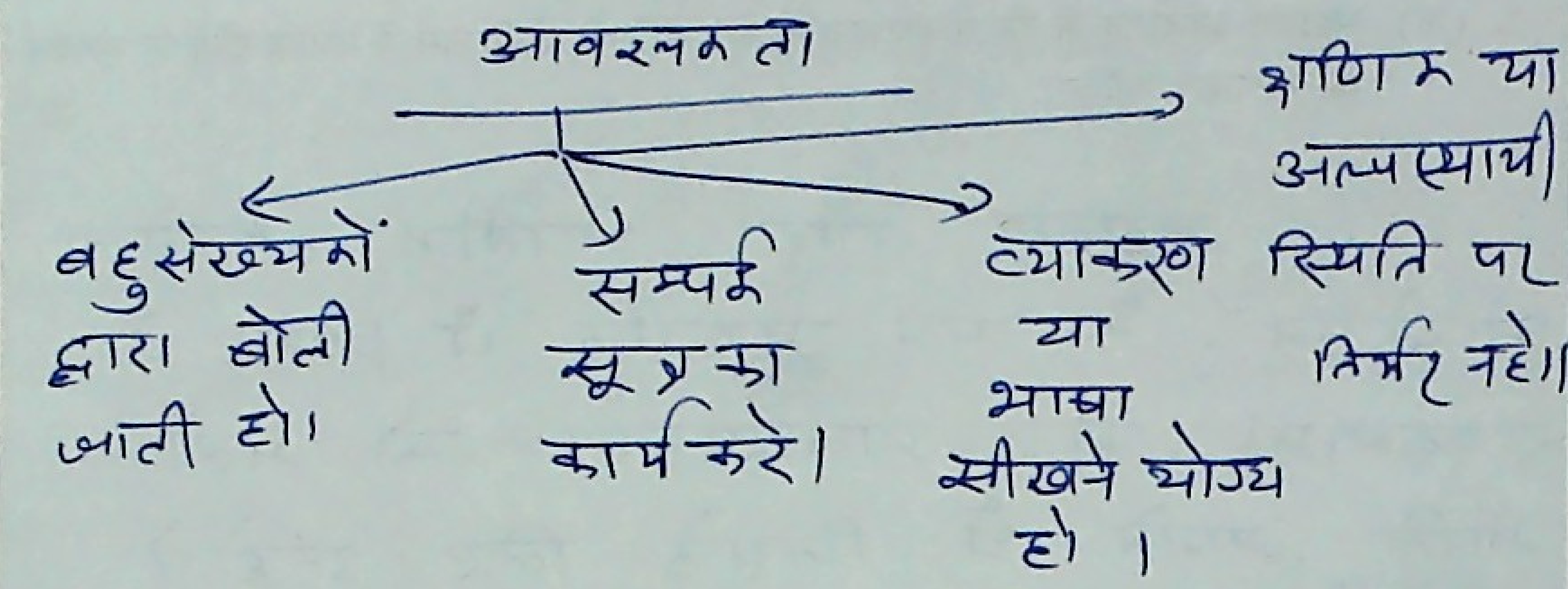

इसी क्रम में उन्होंने कहा कि ये सभी गुण हिन्दी राष्ट्रभाषा में मिलते हैं उन्होंने कहा. "अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के होने वाला हो तो निसंदेह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी"। गाँधीजी ने स्पष्ट किया कि स्वराज्य करोड़ो भूखो मरने वाले, निरक्षर, निरक्षरों तथा दलितो का और उनकी भाषा हिन्दी ही हो सकती है।

हिन्दी साहित्य के प्रचार के लिए वर्धा और मद्रास मे राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा की स्थापना की। जिनमें काका साहब कालेलकर तथा मोटूरि सत्यनारायण ने हिन्दी राष्ट्रभाषा का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रचार दक्षिण भारत मे किया।

दक्षिण भारत ही नही उन्होनें असमिया राष्ट्रभाषा प्रचार समीति, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा इत्यादि की स्थापना कर राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी को स्थापित किया।

यहाँ तक कि महात्मा गाँधी जी के प्रयासो से भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की प्रादेशिक सभाओं मे हिन्दी को बढाया जाने लगा, साथ ही अधिवेशन में हिन्दी समीतियों को सपोर्ट किया गया। नेहरू रिपोर्ट मे कहा गया कि

"यदि हम लोगो ने तन-मन-धन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नही जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिन्दी"

हालांकि स्वतंत्रता के बाद क्षेत्रीय विभाजन भाषायी आधार पर होने के कारण गाँधीजी का यह सपना धुमिल सा हो गया। उसके बाद राजनीतिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संवेदनशीलता के कारण यह मुद्दा दबकर रह गया। हालांकि 2014 के बाद आई मोदी सरकार ने हिन्दी भाषा को आगे बढ़ाने का कार्य किया है।

रामविलास शर्मा के शब्दों मे कहें तो "दक्षिणी भारत में गाँधीजी और उनके अनुयायियों - सहयोगियों ने जितना प्रचार हिन्दी भाषा का किया, उतना किसी अन्य नेता, राजनीतिक संस्था ने नहीं किया"। अतः हम कह सकते हैं गाँधीजी ने राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए काफी प्रयत्न किए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

जिस प्रकार संस्कृत मे तीन वचन स्वीकार किए जाते हैं - एकवचन, द्विवचन, बहुवचन। उस प्रकार हिन्दी मे केवल दो ही वचन प्रयोग में लिए जाते हैं द्विवचन बहुवचन में शामिल हो जाते हैं।

वचन के नियम

पुल्लिंग

आकारान्त पुल्लिंग → एकवचन
लड़का > लड़के
शेष सभी पुल्लिंग → बहुवचन
लड़के

स्त्रीलिंग

ईकारान्त बहुवचन मे ईयाँ हो जाता है
→ मिठाई → मिठाईयाँ
→ नीति → नीतियाँ
→ आकारान्त में एँ
अबला → अबलाएँ

अतः हिन्दी मे संस्कृत की तरह वचनानुसार क्रिया में परिवर्तन होता है।

वह जाता है > वे जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वचन व्यवस्था की विशेषताएँ

(क) कुछ शब्द बहुवचन में ही प्रयुक्त होते है। जैसे -प्राण

- शेर देखकर मेरे प्राण निकल गए

(ख) कुछ शब्द हमेशा एकवचन मे ही प्रयुक्त होते है

जैसे- अग्नि, वर्षा इत्यादि

आज वर्षा हो रही है।

(ग) बिहारी हिन्दी उत्तम पुरुष एकवचन में मैं के स्थान पर हम शब्द के प्रयोग का प्रचलन है।

(घ) तुम शब्द एकवचन मे प्रयोग होता है न कि बहुवचन।

(ङ) विशेषण मे आकारान्तता है वे वचन के अनुसार परिवर्तित होते है, शेष अपरिवर्तित रहता है।

काला घोड़ा > काले घोड़े।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(च) बहुवचन बनाने के लिए एक अन्य तरीके मे वर्ग लगा देते है।

अधिकारी > अधिकारी वर्ग

सवर्ण > सवर्ण वर्ग

अतः हिन्दी की वचन संरचना काफी जटिल है किन्तु लम्बे प्रचलन के साथ अधिकतर समस्याएँ समाप्त हो रही है। जैसे - जैसे मानकीकरण होगा, समस्याओं कम होती जाएगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कबीरेतर संतकवियों के साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वरूप का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संत साहित्य भक्तिकाल की प्रथम धारा मानी जाती है। जिसका समय लगभग 15वी से 17 वी शताब्दी तक है जिनमे कबीरदास मलूक दास, सुन्दरदास आदि प्रमुख है)

संत कवियों ने प्राय: पंचमेल खिचड़ी या सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है। जैसे

जो बिछुड़े है पियारे से, भटकते दर-बदर फिरते
हमारा यार है हममें, हमन को इन्तजारी क्या।

अत: कबीर खड़ी बोली के प्रवर्तक यहाँ देखे जा सकते है। इसके बाद सन्त साहित्य मे खड़ी बोली का काफी-प्रचार-प्रसार हुआ।

इसी क्रम में मलूक दास जी कहते है-

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम
दास मलूका कह गए सबके दाता राम।

खड़ी बोली के उपयोग के प्रमाणत: निम्न कारण हो सकते है-

(क) लोगों को सुगम्य हो।

(ख) संस्कृत के प्रमाण्ड एकाधिकार को तोड़ना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जनता को सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक करना।

(घ) धार्मिक आडम्बरो के प्रति चोट।

(ङ) नयी विचारधारा की स्थापना।

अत: खड़ी बोली जनता के लिए सुग्राह्य थी। इसी क्रम में आगें दरिया साहब, पलटू साहब, यारी साहब जैसे संतकवि भी लिख रहे थे, वह भी खड़ी बोली को समाहित करती है।

जाती हमारी ब्रह्म है, मात-पिता है राम
गिरह हमारा सुन्न मे, अनहद मे बिसराम।

अत: सन्तकाव्य मे जो खड़ी बोली का विकसित रूप सामने आता है, वह आगें खड़ी बोली के प्रारम्भिक स्वरूप का निर्धारण रहा था।

अत: हम कह सकते है कि कबीर तथा कबीरेत्तर सन्तकवियों ने लोगो को जागरूक करने के लिए हिन्दी खड़ी बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का उपयोग किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

प्रा. हिन्दी भाषा संस्कृत से व्युत्पित पालि, प्राकृत से संश्लेषित है, इस भाषा के काल के लिए समीक्षकों के मध्य विवाद है। चन्द्रप्रसाद गुलेरी ने इसे प्रारम्भिक हिन्दी का नाम दिया।

हिन्दी की वियोगात्मकता प्रवृत्ति के कारण व्याकरणिक संरचना मे परिवर्तन पहले से ही शुरू हो गए थे.

① Ⓐ संज्ञा व कारक व्यवस्था

कर्ता - ने, नै
कर्म - को, कौं, कूँ
करण/अपादान - से, तें, तैं

Ⓑ हिं विभक्ति से सभी कारकों का कार्य चल सकता था।

② वचन व्यवस्था

एकवचन से बहुवचन के चिन्ह स्पष्ट होने लगे।
ए, अन प्रत्यय
बेटा → बैटे, बेटा > बेटन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

स्त्रीलिंग मे → यन

सखी > सखियन

③ लिंग संरचना।

स्त्रीलिंग शब्द इकारान्त, पुल्लिंग शब्द सामान्य

आँखि, आगि, औराति।

④ सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं, हौं	हम, हमार, हमारो
मध्यम	तूँ, तूहि, तो	तुम, तुम्ह, तुम्हारो
अन्य	सो, सेर	ते, वे, वो

⑤ विशेषण

संज्ञा के अनुसार विशेषणो के संबंधो मे परिवर्तन –

पीतवसन > पीरो वसन उच्च > ऊँच।

⑥ क्रिया रूप

त रूप → वर्तमान के लिए
करत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

Ⓚ व्याकरणिक व्यवस्था के साथ-साथ शब्दकोशीय व ध्वनि अर्थ संबंधी परिवर्तन भी हुए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की क्रिया-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

क्रिया व्यवस्था

जिसमें कुछ किए जाने या को जाने का भाव होता है।

क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं

सकर्मक — कर्म का भाव हो — राम ने रावण को मारा।

अकर्मक — कर्म का भाव न हो — राम ने मारा।

साथ ही अन्य प्रकार भी

सहायक, रंजक, समीपस्थ, प्रेरणास्थ

→ प्रेरणास्थ – मैंने उसे मरवाया।

→ सहायक क्रिया →

मैं उससे प्यार करता हूँ।

(प्यार → कर्म; हूँ → समीपस्थ क्रिया।)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत की साहित्यिक रचनाओं में प्रेम कथाओं में संस्कृत का काफी प्रचलन था जिसमें उर्वशी - पुरुरवा, ऊषा-अनिरुद्ध कथा, मालती माधव कथा आदि काफी प्रचलित थी। 14वी सदी मे एक सुयोग मात्र यह हुआ कि इन प्रेमाख्यानो के लिए अवधी भाषा और दोहा - चौपाई रूढ़ सी हो गई। इसका मुख्य कारण था कि सूफी संतो ने अपने प्रेमाख्यानो की अभिव्यक्तियों को अवधी के माध्यम से प्रकट किया।

पहली रचना जो अवधी मे है जिसने चलती भाषा को अवधी साहित्यिक भाषा बनादिया - वह है मुल्ला दाऊद की चंदायन। कवि चंदायन ने इसके प्रभाव मे लिखा -

दाऊद कवि जो चंदा गाई
जैई रे सुना सो गा मुरझाई।

इसके बाद कुतुबन की मृगावती, जायसी की पद्मावत आदि उल्लेखनीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जायसी ने अवधी की पराकाष्ठा को उच्च स्तर पर पहुँचाया। उन्होंने निम्न प्रयोग किए-

(क) ठेठ अवधी - संस्कृत की पदावली न के बराबर प्रयोग किए। हालांकि इसमें कहीं-कहीं प्राकृत अपभ्रंश के शब्द (दिनकर > दिनअर, पृथ्वी > पहुमी) का प्रयोग किया।

(ख) ऊ का प्रयोग

शब्दों का प्रयोग अवधी की मिठास में मिलाने के लिए ऊँ का प्रयोग किया।

मिठासू, घरहूँ, जोगू इत्यादि।

(ग) लोकजीवन के मुहावरों का प्रयोग

✓ सीधे अंगुरि निकसै न घीऊ
✓ हिय फटा।

- देशज शब्द का प्रयोग।

इसके साथ ही जायसी ने अपनी भाषा में बिम्बात्मकता का प्रयोग कर भाषा को सजीव किया है-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जेठ जरै जग बहै लुवारा, उठै बवण्डर धिकै पहारा।
चारिहु पवन झकोरै आगि, लंका दाहि पलंका लागि।

भाषा का ऐसा प्रयोग कि भाषा सीधा संवेदना से जुड़कर प्रेमाभिव्यक्ति का प्रकाश देती है-

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाव।
मकु तेहि मारग उडि परौं कंत धरै जहँ पाँव।

भाषा की इसी मिठास पर आचार्य शुक्ल कहते हैं-

"जायसी की भाषा बहुत ही मधुर है उसका माधुर्य निराला है। -- वह संस्कृत की कोमलकांत पदावली पर अवलम्बित नहीं। उसमें अवधी अपनी निज की स्वाभाविक मिठास लिए हुए है। -- अवधी की यह खालिस बेमेल मिठास के लिए पद्मावत का नाम बार-बार लिया जाएगा।"

पद्मावत के उपरान्त भी सूफियों की प्रेमाख्यान की परंपरा लम्बे समय तक चली। इस परंपरा में उस्मान की चित्रावली, नूर मुहम्मद की इन्द्रावती, अनुराग बाँसुरी इत्यादि है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अतः जायसी के बाद भी सूफी कवियों ने अवधी का प्रयोग जारी रखा हालांकि बाद में तत्सम व अर्द्धतत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक होने लगा। अतः ये रचनाएँ शुक्ल जी के अनुसार संस्कृत गर्भित होने लगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) व्याकरण के धरातल पर हिंदी की विभिन्न बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation